दादी गुल्जार के लिए सकाश

अपने मन को आर्डर करें..... फरिश्ते रूप को धारण कर.....चलें भगवान एवं भागीरथ के साकार रथ से..... नयन मुलाकात करने.....वह भाग्यशाली जगन्नाथ का रथ..... जो अपनी गुप्त सेवा .....मायानगरी को मुम्बादेवी की नगरी बनाने की ..... आधार शिला का निर्माण कर रहा है.....देखें वो मुम्बई का..... अपना हॉस्पिटल कमरा नं0.....सामने बेड पर लेटा एक दिव्य फरिश्ता.....अजन्ता की गुफा में लेटी दिव्य विभूति.....निःसंकल्प अवस्था का.....स्थितप्रज्ञ योगी.....प्रभु प्रेम में लवलीन....मगन..... आनन्द की स्वर लहरियों के..... रसास्वादन में लीन.....अब सामने खड़े..... डा0 की बातें ध्यान से सुनें.....कि दादी का शरीर ऐसा लग रहा है कि.....स्वस्थ नही है ..... कारण.....अब अपने सम्पूर्ण स्वरूप को इमर्ज करें..... जाग्रत करें अपने स्वमान को..... मैं प्रकृतिजीत प्रकृतिपति आत्मा हूँ.....आहवान करें प्रकृति के पाँच तत्वों को.....और संकल्प करते ही देंखें..... प्रकृति के पाँच तत्व .....करबद्ध होकर सामने खड़े हैं..... एक–एक को सामने दिखाते हुए बतायें .....जरा सामने देखो तो कौन है.....समग्र सृष्टि के मालिक का रथ.....अन्दर विराजमान है..... देवाधिपति की अतिसय प्रिय संतान.....हम सबकी श्रद्धेय .....गुल्जार–ए–चमन यज्ञ का अनमोल रतन.....दादी गुल्जार.....आप लोग अभी तक भी..... इनकी सेवा से ना वाकिफ.....इनके काम आना भी..... भाग्य पर गर्व करने की बात है.....उस परम सत्ता ने समस्त संसार को . ..जर्जर हालत से निकाल..... श्रेष्ठतम् स्वरूप देने के लिए.....अपना वतन छोड़कर जिस रथ का.....आधार लेते हैं.....आज तुम्हें उनकी सेवा में हाजिर होना है.....भक्ति में तो जगन्नाथ के .....जड़ चित्रों के रथ को छूने के लिए..... कितने दूर–दूर से आते हैं..... और सिर्फ छूना ही..... बड़े भाग्य की बात मानते हैं.....और यहाँ तो चैतन्य रथ है.....ये भी सबको नसीब नहीं.....चलो फिर से गुल्जार करो..... इस भाग्यशाली रथ को..... महसूस करें..... कि प्रकृति के पाँचों तत्व..... अपने आभा मण्डल को..... विकसित करते हुए.....दादी के चारों ओर खड़े हो गये.....और एक – एक तत्व अपनी शक्ति को ..... ऐसे समाहित कर रहा है कि .....शरीर के पाँचों तत्वों का .....काया कल्प होता जा रहा है.... .....और दादी एकदम प्रसन्न .....पुलकित .....मुस्कराती दिखाई दे रही हैं.....और अब

आह्वान करें धनवन्तरि जी का.....धनवन्तरि जी जैसे आदेश की ही पतीक्षा में थे.....और आते ही .....देवदूत को अवलोकन करने की आज्ञा चाही.....और अपने नेत्रों की x-Rays किरणों से.....शरीर की हर गतिविधि को..... बड़ी बारीकी से देखा.....और अपना दाहिना हाथ .....दादी के मस्तक पर रख.....अपने शरीर से औषधीय उर्जा का प्रवाह ..... दादी के शरीर में प्रवाहित कर रहे हैं.....ध्यान से देखें दादी के शरीर का परिवर्तन..... एकदम स्वस्थ.....स्फूर्तिवान.....फ्रेश.....दिव्य.....और अब ऊपर की ओर निहारें.....उस परमसत्ता को .....जो हमारी भावना को स्वीकार कर .....अपनी अनन्त शक्तियों को..... एक लेजर वीम की तरह..... दादी के सिर पर भेज रहे हैं.....देखें आत्मा में समस्त शक्तियों का संचार करते हुए.....अब वो किरणें उर्जा बनकर..... सारे शरीर में फैलते हुए दिखाई दे रही हैं.....ध्यान से देखें शरीर की हर बीमारी..... कालिमा की तरह पैरों की ओर .....से निकलती जा रही है.....पूरे शरीर में उर्जा का अविरल प्रवाह.....शरीर का हर अंग स्वस्थ.....समर्थ.....पॉवरफुल.....दिख रहा है.....अब ध्यान दे दूसरी ओर .....मन्द–मन्द मुस्कराते हुए.....देखो सामने ब्रह्मा बाप आ रहे हैं.....अनेक शक्तियों की छत्रछाया लिए..... ....दादी के सिर के पास आकर खड़े हो गये.....अपना हाथ दादी के सिर पर रख..... अपनी समस्त शक्तियाँ ट्रॉंसफर कर रहे हैं.....आधी सदी जिस रथ का आधार ले..... स्वर्णिम संसार के निर्माण का .....कार्य आगे बढ़ाया.....जो शरीर खुदा और बन्दे के ....मिलन का सेतू बना.....जिसकी नजरों के नूर में.....नूर–ए–इलाही बसा.....जिसकी वाणी से खुदाई राग निकला.....जिसके हस्तों ने वरदाता के....वरदानों की वर्षा की.....जिसके पास निःस्वार्थ पुण्य का बल हो.....करोंड़ों दिल की दुआयें अमृतधारा बन.....दर्द निवारक हों.....भला उसे दर्द छू भी कैसे पायेगा.....यह तो सेवा का एक बहाना है.....देखें दादी को के चारों ओर .....एक प्रकाश का पॉवरफुल गोला.....जिसके अन्दर दादी पूर्णतया सुरक्षित.....मुस्कराती.....देखें दादी को बाबा से .....नयन मुलाकात करते हुए..... जैसे दादी को कोई पीड़ा नहीं.....प्रमाण है शेषशैया पर निश्चिन्त स्थिति का.....बाबा का स्पर्श .....बाबा की नजरें शरीर पर पड़ते ही.....काया कल्प तरू हो रही है.....ध्यान से देखें दादी को.....एकदम स्वस्थ.....प्रसन्न.....खुशनुमा.....अब अपने आपको ध्यान से देखें.....अंग–अंग से प्रकाश की शक्तिशाली किरणें..... वायब्रेशन के रूप में निकलते

हुए.....जो पूरे हॉस्पिटल को उर्जावान बना रही हैं.....अब अपने सामने.....सभी डा0 को इमर्ज करें.....और उनको पॉवरफुल सकाश देते हुए.....उनके मन को.....ब्रेन को पॉजिटिव.....शक्तिशाली बनायें.....समस्त नर्सिंग स्टॉफ को भी .....इमर्ज कर पॉवरफुल उर्जा प्रवाहित करें.....अपने सानिध्य से.....एनर्जी का प्रबल प्रवाह करें.....ऐसा फील करें दादी एकदम स्वस्थ है.....किसी विशेष..... आवश्यक कार्य को यहॉ.....शान्ति से.....पूर्णता प्रदान कर रही है.....इसी विश्वाश के साथ.....वापस आयें और देखें ऊपर.....बाबा हॉस्पिटल को एक सर्किल में रख.....अपनी अनेक शक्तियों को..... एक शॉवर की तरह उस पर डाल रहे हैं..... परमपिता के साथ प्रजापिता के .....दिल में जिसका निवास हो..... धनवन्तरि और प्रकृति.....जिसकी सेवा में अपना गौरव समझते हों.....वह सदा ही आरोग्य एवं निरोग है.....सदा ही स्वस्थ रहेगा.....देखें दादी को शान्त.....स्माइलिंग फेश.....मधुर मुस्कान अपनी बुद्धि के .....फ्रेम में सेट करते हुए.....वापस आयें.....एक सफल .....सुखद .....सुखकर यात्रा.....। ओम शान्ति ।